ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issues– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

दौंड उपन्यास में चित्रित शहरी और ग्रामीण पारिवार

प्रा.माधुरी परशुराम कांबळे

श्रीमती सी.बी.शहा महिला महाविद्यालय , सांगली .

समाज में परिवार एक महत्वपूर्ण इकाई है। परिवार पति - पत्नी और बच्चों के समूह को कहते हैं ।परिवार के बिना समाज जीवन में निरंतरता नहीं आती बच्चों पर संस्कार करना और समाज के आचार व्यवहार में उन्हें दीक्षित करने काम परिवार में होता है। परिवार के द्वारा ही समाज की सांस्कृतिक विरासत और संस्कृति हस्तांतरित होती है। आज मानव विकास के साथ - साथ परिवार में भी बदलाव आ गया है। परिवार में नई प्रथाएँ और परंपराओं का समावेश हुआ है। और इसका प्रभाव पारिवारीक जीवन पर हो रहा ममता कालिया ने दौड़ उपन्यास के माध्यम से पारिवारीक जीवन , पारिवारीक समस्याएँ तथा परिवार के बदलते स्वरूप का तत्कालीन सामाजिक , आर्थिक जीवन में हुए प्रभाव का चित्रण बड़ी बखूबी से किया है। ममता कालिया ने दौड उपन्यास के माध्यम से शहरी पारिवारीक जीवन और भारतीय (देहाती) ग्रामीण परंपराओं को प्रस्तुत किया है। लेखिका ने उपन्यास के नायक पवन के माध्यम से आज के पति - पत्नी की ओर देखने की दृष्टि कैसे बदली है यह दिखाया है , लेखिका कहती है कि आधुनिक काल में युवक उसी से शादी करना पसंद करते है जो उसे अपने कारोबार में मदत करे / हात बाट सके। पुराने जमाने कि तरह नहीं. युवक मानते है कि स्त्री - पुरुष समानता के इस युग में युवकों को काम में मदद करनेवाली पत्नी चाहिए जो घर संभालने के साथ - साथ पति के काम में मदद करें।

Copyright © 2022 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

भारतीय संस्कृति में विवाह एक महत्वपूर्ण संस्था है। भारतीय परंपराओं में विवाह में बुजुर्गों की राय महत्वपूर्ण होती है। लेकिन दौड़ उपन्यास के नायक , नायिका अपना विवाह खुद तय कर लेती है। बुजुर्गों की राय लेती दिखाई नहीं देती। पवन और स्टैला एक साथ एक ही कंपनी में काम करते हैं , दोनों एक - दूसरे से शादी करने का फैसला करते है। इसमें अपना माता - पिता को पूछना जरूरी नहीं समझते। स्टैला ई - मेल और पवन फोन पर माता - पिता को जानकारी देता है की "उसने लड़की पसंद कर ली हैं और वे अगले महीने यानी जुलाई मे शादी कर लेंगे"।१

पवन कि माता - पिता असलियत जानने के लिए पवन के माता - पिता राजकोट जाते है , तो वहाँ देखते है कि पवन और स्टैला दोनों साथ रहते है। पवन माँ से परिचय करवाता है कि "मॉ स्टैला मेरी बिजनेस पार्टनर , लाइफ पार्टनर , रूम पार्टनर तीनों है"।2 तब माँ कहती है कि यह तुम्हारे लायक नहीं है। तो पवन अपने माँ के दिल को चाटे लगनेवाली बात कहता है। आज कल के लड़के अपने पैरोपर खड़े होने के बाद खुद के निर्णय खुद लेते है माता - पिता की राय लेना उचित नहीं समझते।

भारतीय संस्कृति में संगीत को बड़ा ही महत्व है। संगीत से मन प्रसन्न होता है। भारतीय परिवार में जहाँ सुबह - सुबह भजन या भक्ति गीत सुनते है वहाँ राजकोट में पवन के घर सुबह - सुबह तेज संगीत में फिल्मी गीत बजते है।पवन की माँ को यह शोर अच्छा नहीं लगता तो अनुपम कहता हैं " सॉरी सुबह मुझे खूब ज़ोर ज़ोर से गाना सुनना अच्छा लगता हैं।और फिर पवन भैया को उठाने का और कोई तरीका भी तो नहीं हैं"।3 माँ सोचती है कि पवन कितना बदल गया है। स्टेला अपनी सास को सुबह गुलदस्ता देकर उठाती है. इतना ही नहीं हर रोज कोई उपहार हाती है। पवन और स्टेला स्वामीजी के आश्रम में जाकर सामूहिक विवाह की पद्धति से शादी करना चाहते है परंपरा के अनुसार शादी करने का समय उनके पास नहीं है।

दूसरी ओर अभिषेक शुक्ला और राजूल के माध्यम से शहरी परिवार का चित्रण किया है। राजूल आधुनिक विचारोंवाली स्त्री है। पुराने परिवार की तरह

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issues– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

खाना बनाना , बच्चों को संभालना उसे अच्छा नहीं लगता । जब वे लोग बाहर घूमने जाते है तब बाहर ही खाना खाकर आते है । इतना ही नहीं बच्चे का रोना उन्हें पसंद नहीं है । बच्चे की हर एक जिंदद वह पूरी करती है।"प्राय: यह होता कि वह अभिषेक, उसकी पत्नी राजुल और उनके नन्हें बेटे अंकुर के साथ कहीं घूमने निकल जाता लौटते हुए बाहर ही डिनर ले लेते"।4

राजूल और अभिषेक का गृहस्थी जीवन असंतोष से भरा हुआ है , इसका वर्णन भी किया है । अभिषेक एक विज्ञापन कंपनी में काम करता है । दो कंपनीयों में विज्ञापनों को लेकर रेस लगी हुई थी । अभिषेक पर कंपनी मॉडेल चुनने की जिम्मेदारी सौंपी लाता है । तब अभिषेक एक ब्यूटी पार्लर की मालकिन पर दबाव है कि अपनी बेटी को मॉडेलिंग करने दे । इस बात को लेकर राजूल और अभिषेक में तणाव पैदा होता है वह कहती हैं " यों कहों कि तुम्हें मॉडल की तलाश मे मजा आ रहा हैं"।5 इससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्री कितनी भी आधुनिक क्यों न हो जाए लेकिन अपने पती को किसी दूसरे स्त्री के साथ देखना पसंद नहीं करती दोनों के बीच तणाव का परिणाम उनके दाम्पत्य और पारिवारीक जीवन होता है ।

साराश : हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में परिवार के बदलते स्वरूप को दर्शाया । ममता कालिया ने दौड उपन्यास के माध्यम से पारिवारीक जीवन , पारिवारीक समस्याएँ तथा परिवार के बदलते स्वरूप का चित्रण यथार्थ रूप से किया है । दौड उपन्यास में शहरी और ग्रामीण परंपराओं को प्रस्तुत किया है । पवन खुद की शादी खुद तय करता है इतना ही नहीं शादी की रस्मों की और ध्यान न देकर किसी आश्रम में शादी करना चाहता है । अपनी पत्नी चुनते वक्त अपने कारोबार में मदद करनेवाली हाथ बाटनेवाली पत्नी चाहिए । ग्रामीण भागों परिवारों में सुबह - सुबह जहाँ भजन गाथे जाते है वही शहरी भागों में सुबह - सुबह फिल्मी संगीत सुना जात है इसका भी वर्णन किया है । अभिषेक और राजूल के माध्यम से गृहस्थी जीवन में असंतोष कैसे पैदा होता है इसको दिखाया है ।

संदर्भ ग्रंथ :

डॉ . विद्या शिंदे- दौड ' में भूमण्डलीकरण की सार्थकता का यथार्थ चित्रण ए.बी.एस. पब्लिकेशन , वाराणसी .

डॉ . कुसुम शर्मा - साठोत्तरी हिंदी उपन्यास विविध प्रयोग श्यान प्रकाशन जयपूर

डॉ . शिलप्रभा वर्मा महिला उपन्यास कारणों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ विद्याविहार प्रकाशन

डॉ . ममता कालिया - दौड वाणी प्रकाशन नई दिल्ली .

वहीं – पन्ना – 55

वहीं – पन्ना – 54

वहीं – पन्ना – 57

वहीं – पन्ना – 28

वहीं – पन्ना – 37

Cite This Article:

प्रा.माधुरी परशुराम कांबळे , (2022). दौंड उपन्यास में चित्रित शहरी और ग्रामीण पारिवार, *Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal, XI (I), 271-272.*